महाभारत में उपलब्ध नीतिपरक उद्धरणों का समीक्षात्मक अध्ययन

संस्कृत विषय में पी–एच0 डी0 की उपाधि हेतु

प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध की

प्रस्तावित–रूपरेखा

२०१४

निर्देशिका

प्रो० मीरा शर्मा

संस्कृत विभाग, कला संकाय

डी०ई०आई० दयालबाग़, आगरा

शोधार्थिनी

पूनम कुमारी

एम०ए०, एम० फिल्०

(संस्कृत)

अध्ययन क्षेत्र– संस्कृत साहित्य

विभागाध्यक्ष एवं संकाय प्रमुख

प्रो० (श्रीमती) उर्मिला आनन्द

संस्कृत विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग़, आगरा–२८२००५

संस्कृत वाङ्मय नीति–तत्त्व की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है। काव्य हो अथवा शास्त्र, विज्ञान हो अथवा कला, अध्यात्म हो अथवा दर्शन सभी में नीति–तत्त्व को आधार–स्तम्भ के रूप में स्वीकार किया गया है। वेद, पुराण, महाभारत इत्यादि काव्यग्रन्थों में नीति–तत्त्व की समृद्ध एवं गौरवशाली परम्परा विद्यमान है, मनुष्य के कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य की विवेचना नीति के द्वारा ही सम्भव है, अतः मानव जीवन में आदर्शों की विवेचना इसके अन्तर्गत ही आती है।

'नीति' शब्द संस्कृत की **'नी'** धातु में **'क्तिन्'** प्रत्यय के योग से निष्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है–

'नीयन्तेसंलभ्यन्ते उपायादयः ऐहिकामुष्मिकार्थाः वा अनया।'

अर्थात् जिससे मानव के सांसारिक और पारलौकिक अभ्युदय के उपायों का परिज्ञान हो। अन्य शब्दों में, नीति का अर्थ वे नियम हैं जिन पर चलने से मनुष्य का ऐहिक, आमुष्मिक और सनातन कल्याण हो, समाज में स्थिरता और सन्तुलन रहे सब प्रकार से अभ्युदय हो और विश्व में शान्ति रहे अर्थात् जिन नियमों के पालन से व्यक्ति एवं समाज दोंनों का ही श्रेय हो, वे नीति के अन्तर्गत आते हैं संक्षेप में नीति वह है जो उन्नति की ओर ले जाती है–

'नीयन्ते उन्नीयन्ते इति नीति'

महाभारत हमारे देश का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रामाणिक इतिहास–ग्रन्थ ही नहीं है, अपितु समग्र वाङ्मय का शिरोभूषण भी है। मानव जीवन की आकांक्षा का ऐसा कोई विषय नहीं है, जिसका उल्लेख इस ग्रन्थ में न हो ओर जिसकी प्राप्ति के साधनों का प्रतिपादन न किया गया हो।

जिस प्रकार वेदों का सार गायत्री मंत्र या सावित्री है एवं समुद्र और हिमालय रत्नों की खान है उसी प्रकार महाभारत धर्म, अर्थ, काम और मोक्षादि से निहित नीतिपरक उद्धरणों का आलय है। मानव जीवन के लक्ष्य भारतीय परम्परा में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को ही माना गया हैं। इसीलिए नीति को भी इन्हीं

चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है धर्म सम्बन्धी नीतियाँ अर्थ सम्बन्धी नीतियाँ, काम सम्बन्धी नीतियाँ, तथा मोक्ष सम्बन्धी नीतियाँ आदि। यदि व्यापक अर्थ में कहा जाए तो इन चारों से सम्बद्ध नीतियाँ ही नैतिकता के स्वरूप को स्पष्ट करती है। इसीलिए महाभारतकार का कहना है–

"धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभः
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।।"

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के विषय में ऐसी कोई बात नहीं हो सकती जो महाभारत में उपलब्ध न हो। उनके सम्बन्ध में इस ग्रन्थ में जो कुछ कहा गया है, उसी का आंशिक उल्लेख अन्य ग्रन्थों में प्राप्त होता है जो बात इस ग्रन्थ में नहीं कही गयी वह अन्य ग्रन्थों में भी प्राप्त नहीं है।

भारतीय जनमानस प्राचीन काल से महाभारत के नीतिपरक–सन्दर्भों को सुनता रहा है और अपने जीवन में आदर्श–वाक्य के रूप में भी स्वीकार करता रहा है। यही कारण है कि महाभारत में उल्लिखित नीतिपरक–सन्दर्भ मानव जीवन के लिए प्रकाश–स्तम्भ की भाँति उसका मार्ग प्रशस्त करते रहे हैं। आज जबकि नैतिक मूल्यों का दिन–प्रतिदिन क्षरण हो रहा है तथा युवावर्ग शनैः–शनैः नैतिक मर्यादाओं को विस्मृत कर जीवन के उस दोराहे पर खड़ा है जहाँ से कोई मार्ग उसके जीवन को सार्थक और सफल नहीं बना सकता अतः वर्तमान युवापीढी को इस दिग्भ्रमित दिशाहीन स्थिति से बचाने के लिए एकमात्र आश्रय है– हमारे आर्षग्रन्थों में निहित नीतियाँ। इसी तथ्य ने मुझे इस शोध हेतु प्रेरित किया और मुझे यह अनुभूति हुई कि समाज में शान्ति एवं उन्नति हेतु नैतिक आचरण की महती आवश्यकता है और महाभारत में निहित नीतियाँ मानव–समाज के लिए प्रेरक सिद्ध हो सकती हैं इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मैंने शोध के आधार ग्रन्थ के रूप में महाभारत का चयन किया।

महाभारत आर्य संस्कृति का प्रतिनिधि ग्रन्थ है, इसीलिए उससे सम्बन्धित अनेक विषयों पर शोध–कार्य किया जाता रहा है यथा– डॉ० प्रकाश गुप्ता के निर्देशन में शुभ्रा चतुर्वेदी द्वारा **'महाभारत में प्रतिबिम्बित संस्कृति का समीक्षात्मक अध्ययन'** (बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, ७ जनवरी २०१४), डॉ० रामशंकर उपाध्याय के निर्देशन में दिनेश कुमार सिंह द्वारा **'महाभारत में निरूपित कृष्ण के राजनैतिक विचारों का अध्ययन'** (बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, ७जनवरी २०१४), प्रेमानन्द गुप्ता के निर्देशन में लीलाराम द्वारा **'महाभारत में मूल्यव्यवस्था : एक अध्ययन'** (कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, १९९१), सुष्मिता त्रिपाठी द्वारा **'महाभारत एवं रामायण में शिष्टाचार नैतिकता एवं जीवन मूल्य : एक तुलनात्मक अध्ययन'** (लखनऊ विश्वविद्यालय, १९८८), दिनेश प्रभा द्वारा **'महाभारत का आधुनिक (२० शताब्दी के) संस्कृत काव्यों पर प्रभाव',** (डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, २००३),

Essential features of Indian culture and spirtuality as presented in the Mahabharata.

Researcher-Huchzermeyer;Wilfred, Guide- Laddu,SD (University of pune, 1986).

अतः विषय चयन करने से पूर्व जानकारी के लिए मैंने विविध विश्वविद्यालयों के ग्रन्थालयों, शोध–प्रबन्ध, इन्टरनेट आदि का गहन अन्वेक्षण किया किन्तु महाभारत में नीति विषय को लेकर कोई कार्य मेरे संज्ञान में नहीं आया है मेरे द्वारा दिल्लीविश्वविद्यालय के संस्कृतविभागाध्यक्ष एवं संकाय प्रमुख उद्भट् विद्वान **प्रो०एम०एम० अग्रवाल**, श्री लालबहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ दिल्ली के पुराणेतिहास विभाग के अध्यक्ष एवं संकाय प्रमुख **प्रो० इच्छाराम द्विवेदी** जी से परामर्श लिया गया, जिन्होंने अपनी अनौपचारिक स्वीकृति

प्रदान कर मेरा उत्साह बढ़ाया, इसीलिए मैंने **'महाभारत में उपलब्ध नीतिपरक उद्धरणों का समीक्षात्मक अध्ययन'** इस विषय का चयन किया।

शोध की पूर्व अध्ययन–सामग्री के रूप में मूलग्रन्थ महाभारत, ग्रन्थालयों में उपलब्ध सन्दर्भ–ग्रन्थ, आलोचनात्मक–ग्रन्थ, विश्वकोष, शब्दकोष एवं शोध–पत्रिकाओं का अध्ययन किया जाएगा। इसके साथ ही इन्टरनेट, ई–लाइब्रेरी, ई–बुक्स, ई–गूगल आदि के माध्यम से प्राप्त सामग्री का भी अध्ययन किया जाएगा।

शोध के न्यादर्श के रूप में महाभारत के नीतियुक्त उदाहरणों का चयन कर उद्धरण–कार्ड बनाए जाएंगे, जिसके माध्यम से शोधकार्य को अग्रिम दिशा प्रदान की जाएगी, साथ ही महाभारत में उद्धरित नीतियों का समीक्षात्मक अध्ययन करने पर मैं इस तथ्य को पुष्ट कर पाऊँगी कि आर्ष महाकाव्य महाभारत हर प्रकार की नीतियों से परिपूर्ण है जो कि समाज का हर प्रकार से उत्थान एवं उन्नति करने में सहायक सिद्ध होंगी। इसी शृंखला में आगमन विधि का प्रयोग करते हुए मैं अपना यह शोध कार्य करूँगी, जिसमें महाभारत में उपलब्ध उद्धरणों के आधार पर नीतियों की विवेचना की जाएगी तत्पश्चात् सन्दर्भ सूची को प्रस्तुत किया जायेगा।

आज का युग व्यक्तिवादी युग है, लोकतन्त्र ने व्यक्ति के महत्त्व को बहुत ऊँचा उठाया है और उसके सामाजिक और राष्ट्रीय दायित्त्वों को भी भिन्न–भिन्न प्रकार से निर्धारित किया है। इसीलिए आज भी धारणा यह है कि यदि नागरिक उत्कृष्ट कोटि का होगा तो समाज और राष्ट्र भी उत्कृष्ट कोटि का बन जाएगा अतः नागरिकों को उत्कृष्ट बनाने में महाभारत की नीतियाँ अपनी विशेष भूमिका का निर्वाह कर सकती है, अतः मेरा यह विश्वास है कि मेरे इस अध्ययन के द्वारा शिक्षा जगत् के समक्ष एक ही स्थान पर समस्त प्रकार की (धर्मार्थ सम्बन्धी) नीतियों को प्रस्तुत करने में मैं सक्षम हो सकूँगी। अतः आशा है कि विज्ञजन मुझे इस विषय पर शोध कार्य करने की अनुमति प्रदान कर मेरा मार्ग प्रशस्त करेंग

महाभारत में उपलब्ध नीतिपरक उद्धरणों का समीक्षात्मक अध्ययन

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय— नीति : परिभाषा, स्वरूप एवं क्षेत्र

१.नीति : परिभाषा एवं स्वरूप

(क) भारतीय दृष्टिकोण

(ख) पाश्चात्य दृष्टिकोण

२.नीति—क्षेत्र

(क) धर्मनीति

(ख) अर्थनीति

(ग) कामनीति

(घ) मोक्षनीति

(ङ) राजनीति

(च) प्रकीर्णनीति

३. निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय— महाभारत में उपलब्ध धर्म—परक नीतियों का विवेचन

१. महाभारत में धर्म का स्वरूप

२. महाभारत में धर्मपरक नीतियों का विवेचन

३. निष्कर्ष

तृतीय अध्याय— महाभारत में उपलब्ध अर्थ एवं राजनीतिपरक नीतियों का विवेचन

१.(क) महाभारत में अर्थ का स्वरूप

(ख) महाभारत में उपलब्ध अर्थपरक नीतियों का विवेचन

२.(क) महाभारत में राजधर्म का स्वरूप

(ख) महाभारत में उपलब्ध राजनीतिपरक नीतियों का विवेचन

३. निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय– महाभारत में कामपरक नीतियों का विवेचन

१. महाभारत में काम का स्वरूप

२. महाभारत में कामपरक नीतियों का विवेचन

३. निष्कर्ष

पंचम अध्याय– महाभारत में उपलब्ध मोक्षपरक नीतियों का विवेचन

१. महाभारत में मोक्ष का स्वरूप

२. महाभारत में मोक्ष परक नीतियों का विवेचन

३. निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय– महाभारत में उपलब्ध प्रकीर्ण नीतियों का विवेचन

१ .महाभारत में प्रकीर्ण नीतियाँ

२. महाभारत में प्रकीर्ण नीतियों का विवेचना

३. निष्कर्ष

उपसंहार– १. अध्ययन का निष्कर्ष २. वर्तमान में प्रासङ्गिकता

सन्दर्भ–ग्रन्थ सूची

ग्रन्थ	ग्रन्थकार	प्रकाशन
मूलग्रन्थ–		
१.महाभारत	श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत	गीता प्रेस, गोरखपुर २००५
सहायक ग्रन्थ–		
२.भर्तृहरि के शतककाव्यों का साहित्यिक एवं दार्शनिक अध्ययन	डॉ० कृष्ण चन्द्र	कलाप्रकाशन, वाराणसी २००९
३.महाभारत चरित–चर्चा		नमन प्रकाशन, नई दिल्ली
४.महाभारत में शान्ति पर्व आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ० सुमेधा विद्यालंकार	ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली १९८४
५.महाभारत में भारतीय संस्कृति वनपर्व के सन्दर्भ में	डॉ० सुजाता रानी	संजय प्रकाशन दिल्ली, २००२
६.महाभारत भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्य	जगत नारायण दुबे	संजय प्रकाशन दिल्ली, २००८
७.भगवद्गीता	–	गीताप्रेस गोरखपुर
८.भारतीय नीतिशास्त्र	डॉ० दिवाकर पाठक	हिन्दी ग्रन्थ अकादमी १९८२

९.भारतीय नीति का विकास	डॉ० राजबली पाण्डेय	राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
१०.भर्तृहरि के शतककाव्यों का साहित्यिक एवं दार्शनिक अध्ययन	डॉ० कृष्णचन्द्र	कला प्रकाशन, वाराणसी २००९
११.शुक्रनीतिः	श्री जगदीश चन्द्र मिश्र	चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी १९९८
१२.शान्तिपर्व में नैतिक मूल्य	डॉ० हरिवंश अनेजा	कादम्बरी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९८६
१४.संस्कृत के लोकविश्रुत नीतिकाव्य एवं आंकलन	डॉ० किरन शुक्ल	जे० पी० पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, २०००
१४.संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास (तृतीयखण्ड)	श्री बलदेव उपाध्यय	उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ
१५.श्री भर्तृहरि कृत नीतिशतकम्	डॉ० के०के०आनन्द	संजय पब्लिकेशन्स आगरा २०००

अनुसंधान प्रविधि के लिए—

१६.अनुसंधान परिचय	पारसनाथ राम सी०पी०राय	लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, १९७३

१७.अनुसन्धान विधियाँ	डॉ०डी०एन० श्रीवास्तव	साहित्य प्रकाशन, आगरा

शब्दकोश

१८.पारिजात कोशः	डॉ० ईश्वरचन्द्र शर्मा	परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली, २००४
१९.संस्कृत हिन्दी कोश	वामन शिवराम आप्टे	मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, दिल्ली १९६६, १९६९
२०.भाषा शब्दकोश	डॉ० रामशङ्कर शुक्ल रसाल	रामनारायण लाल बेनीप्रसाद इलाहाबाद १९७१
२१.संस्कृत शब्दार्थकौस्तुभ	स्वर्गीय चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा, ए०ए० तथा पण्डित तरिणीश झा, व्याकरण वेदान्ताचार्य	रामनारायण लाल इलाहाबाद १९५७

Websites-

1-Shodhganga. inflibnet.ac.in

2-www.sanskrit. nic.in/theses-modified/DirectoryV/Index.htm

3-pdfsearch. asia/shodhgangotri.html